(व्यंग्य)

तबादला

राजेश विक्रांत

डी-10/ एलआईसी जीवन शांति कालोनी,

एस वी रोड, सांताक्रुज पश्चिम

मुंबई 400054

मोबाइल: 9820120912

ई मेल: rajeshvikrant@gmail.com

सच पूछा जाए तो तबादला ही वह कारण है जिसकी वजह से मैं प्रमोशन से दूर रहा। दरअसल, प्रमोशन के तुरन्त बाद तबादले का आगमन होता है। दफ्तरों के लिए यह सराहनीय सा शुभ कर्म हो सकता है पर तबादलाग्रस्त के लिए यह कालाहांडी और युगांडा में पोस्टिंग का सुख देने वाला होता है। मैंने आज तक किसी महामना को तबादला होने पर शायद ही आनन्दित देखा हो। हां अगर अपना तबादला करवाया जाए तो तबादला मलाईदार भी हो जाते है।

मेरी राय में बदला से कम खतरनाक नही होता तबादला। वैसे देखा जाए तो यह वस्तुतः बड़े अफसर की बुद्धि, इच्छा और सनक पर निर्भर होता है। अफसर से यह भी याद आया कि यह जीव कई कामों के लिए जाना जाता है। उसमें अधीनस्थों को डांटना फटकारना, फाइलों पर सांप की तरह कुंडली मार कर बैठ जाना, फाइल रूपी दुल्हन का खरीदार खोजना, सोमरस, निंदा स्तुति, नींद, आराम, षडयंत्र, लल्लो चप्पो के साथ किसी का का तबादला करवाना या खुद तबादले की दशा को प्राप्त होना शामिल है।

हकीकत में साहित्यकार विभूति नारायण राय की किताब और भोजपुरी एक्टर पवन सिंह की फिल्म "तबादला" से ज्यादा रोचक होता है असली तबादला। यह सरकार की सनक दिखाता है सत्ता की हनक भी। अफसर हो या कर्मचारी सभी को बराबर यह प्रसाद के रूप में प्राप्त होता है। सरकार इस बारे में किसी से कोई भेदभाव नहीं करती। सभी को तबादले, स्थानांतरण और ट्रांसफर का आनन्द मुहैया कराती है। आई ए एस, आई पी एस, डॉक्टर, कांस्टेबल, इंस्पेक्टर, सब इंस्पेक्टर, डी एस पी, शिक्षक, पंचायत सचिव, बेसिक शिक्षा अधिकारी आदि कोई भी, कभी भी, कहीं भी तबादला दशा को प्राप्त हो सकता है। जो चाहता है उसका तो होता ही है जो नहीं चाहता उसका भी तबादला हो जाता है। फिर आप करते रहिए तबादले के खिलाफ अपील, निवेदन, फुसफुसाहटें, आवेदन, कानाफूसियां, बतकहियां, खिलाफत, चुगलियां, विरोध आदि। कुछ फर्क नहीं पड़ेगा क्योंकि तबादले की प्रक्रिया तो संपन्न हो चुकी होती है।

तारीफ़ करने पर भी तबादला मिलता है और लताड़ने पर भी इसे पाया जा सकता है। जो लोग ईमानदारी को ही सर्वोपरि मानने की मूढ़ता में लीन रहते हैं उनका तबादला ज्यादा होता है। पिछले साल एक कलेक्टर ने सराहना करके तबादला प्राप्त किया था। दरअसल, उन्होंने फेसबुक में देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की तारीफ की थी! बस फिर क्या था। सरकार ने अपना चिर परिचित हथियार निकाला और तत्काल उनका तबादला कर दिया गया।

यूपी की एक पुलिस अधिकारी ने शहर में ट्रैफिक नियमों को तोड़ने के आरोप में कुछ नेताओं या नेतानुमा महानुभावो को लताड़ लगा कर इधर जुर्माना किया उधर उनका तबादला कर दिया गया। सरकार ने इसमें कोई कोताही की। न तो देर लगाई। तुरन्त का दान महा कल्याण। यह तो सरकार का परम कर्तव्य है।

यूपी में तैनात डीएसपी श्रेष्ठा ठाकुर, मध्यप्रदेश में तैनात तहसीलदार अमिता सिंह तोमर और कर्नाटक में तैनात डीआइजी जेल डी रूपा, इन तीनों लोगों में समानता क्या है। इस सवाल का जवाब बेहद सीधा सा है, तीनों महिलाएं और प्रशासनिक अधिकारी हैं। लेकिन एक ऐसा शब्द भी है जो इन तीनों लोगों से जुड़ा हुआ है और वो है तबादला। कर्नाटक सरकार ने डी रूपा का तबादला यातायात विभाग में महज इसलिए कर दिया क्योंकि उन्होंने बेंगलुरु सेंट्रल जेल में एआइएडीएमके नेता शशिकला को मिलने वाली सुविधा का खुलासा किया था।

अदला- बदली शब्द युग्म से निकला है फ़ेर बदल, बदलाव, बदलना, बदली और फिर तबादला। सरकार न्यायपूर्ण बदलाव को तबादला कहती है पर हकीकत में तबादला न्याय, अन्याय, खुशामद, चाहत, इच्छा, अनिच्छा, स्वेच्छा, पुरस्कार, दंड आदि की बेमेल खिचड़ी होता है। वैसे सरकार की नई सुबह और भरोसे को तबादले से ऊर्जा मिलती है। तबादला नामक क्रिया, प्रतिक्रिया या कार्यवाही को सरकार स्वच्छ व पारदर्शी प्रशासन के लिए रामबाण मानती है। इसे प्रगति की दवा, विकास का कैप्सूल, तरक्की की टॉनिक, कल्याण की सुई, हित की टैबलेट, भी माना जाता है। कुछ दिलजले कहते हैं कि किसी अफसर को खुश करने का तरीका मेहनत, लग्न, ईमानदारी, कार्यकुशलता, कर्तव्यनिष्ठा और मधुर व्यवहार है। मैं कहता हूं कि यह लंबा और कांटों भरा रास्ता है। अफसर का तबादला उसकी मनचाही जगह पर करवा दो। अफसर परम खुश हो जाएगा। किसी अफसर से बदला लेना है तो और कुछ न करो। बस उसका तबादला गढ़ चिरौली करवा दो।

हालांकि तबादला जीवन की तरह छणभंगुर होता है। इसलिए तबादले किए जाते हैं, रोके जाते हैं, रद्द होते हैं, निरस्त होते हैं। तबादलों की सूचियां बनती हैं, बिगड़ती हैं, बदलती भी हैं।

कोई खुशकिस्मत तो तबादले को थोक के भाव में भी पाता है। एक सीनियर आईएएस तो अब इस मामले में कमोबेश किंवदंती ही बन चुके हैं, 23-24 साल के करियर में जिनके 45 तबादले हुए। एक अन्य पुलिस अधिकारी इस मामले में इतने खुशकिस्मत हैं कि वे अपने 24 साल के करियर मे 24 तबादलों का आनन्द उठा चुके हैं। सच में तबादले ही इन अधिकारियों की कर्मठता के साथ अकर्मण्यता के भी प्रमाणपत्र बन गए हैं।

तबादला ही सरकार का विजन है, एजेंडा है, योजना है, व्यवस्था है, इंतजाम है, इनाम है, दंड है। तबादला ही सरकार का सच है, कार्यक्रम है, ख़ुशी है, भरोसा है, कार्यान्वयन है और प्रोत्साहन है। तबादला नामक औजार से सरकार बारह बाट भी करती है और बालू की भीत भी उठाती है। जो जैसा समझे वैसा आनन्द तबादले में खोज सकता है।

परिचय: राजेश विक्रांत

(सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार राजेश विक्रांत जी ने "दोपहर का सामना" में साप्ताहिक व्यंग्य स्तंभ बतरस का लेखन किया है। पुस्तक "बतरस" लिए उन्हें महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी द्वारा "आचार्य रामचंद्र शुक्ल व्यंग्य पुरस्कार" से सम्मानित हुए हैं। वे "दोपहर का सामना" में व्यंग्य स्तम्भ बतरस, सन्डे 360 तथा विक्रांत व्यू" के लेखक रहे हैं। दबंग दुनिया में उनका स्तंभ हर हर व्यंगये भी चर्चित रहा है। उनकी मौलिक, अनुवादित तथा संपादित पुस्तकें हैं--- सत्संग सार, मुंबई में एक और समंदर, कथा पुष्पांजलि, हास्य से पगी यादें, मुंबई माफिया: एक एन्साइक्लोपीडिया, श्रीमत परमहंस अद्भुत चरित, महामंडलेश्वर विश्वेश्वरानंद गिरिजी महाराज गौरव ग्रंथ, अवधी ग्रन्थावली, खण्ड 6 शब्दकोश, बतरस आमची मुंबई, अमेठी के मुंबईकर, कोरोना-डाउन , भाग्य अंकशास्त्र 1, दृश्य संचार तथा आजादी की लड़ाई में मुंबई का योगदान।)